अमृत-पत्र

प्रिय आत्मन्,

मैं आनंद में हूं।
प्रभु के सान्निध्य में कितना आनंद है!
जरा-सा मोड़ लेते ही कितने रहस्यमय लोक के दर्शन होते हैं!
इंद्रियों के इस पार दुख और पीड़ा है।
बंधन के अतिरिक्त यहां और कुछ भी नहीं है।
पूरे जीवन उनकी मृग-मरीचिका में दौड़कर अवसाद और पराजय के सिवाय और क्या मिलता है?
और, इंद्रियों के पीछे कौन छिपा बैठा है?
उसका द्वार खोलते ही सब मिल जाता है—जिसकी खोज थी, जन्मों-जन्मों से।
तृष्णा मिट जाती है।
प्यास विलीन हो जाती है।
और, हो जाता है चैतन्य—परिपूर्ण।
इंद्रियों के पीछे झांकना है।
इसके सिवाय अशांति से जागने का और अशांति को जीतने का और कोई मार्ग नहीं है।
और, प्रत्येक झांक सकता है।
जो इनके बाहर झांक रहा है, वह इनके भीतर भी झांक सकता है।
बाहर देखने पर, मिलन होता है 'पर' से।
भीतर देखने पर, मिलन होता है 'स्वयं' से।
यह मिलन ही योग है।
और, यह मिलन कैसे नृत्य से, कैसे संगीत से भर देता है!
पर, मिलन हो, तब इस नृत्य की बात करनी है।

– **ओशो**

प्रेम की झील में अनुग्रह के फूल

रसो वै सः

प्रस्तुत अंक भक्ति को समर्पित अंक है। अक्टूबर माह में ओशोधाम में एक ओशो भक्ति शिविर का आयोजन भी होगा, जिसका संचालन मा धर्म ज्योति करेंगी। इस अंक में प्रस्तुत हैं भक्ति के सभी आयाम, भक्ति के सभी रंग-तरंग-उमंग और उनमें बहती हुई रसधार। और इसे शीर्षक दिया है : रसो वै सः! अर्थात् परमात्मा रसरूप है। भक्ति परम प्रेमरूपा है। इसलिए यह सुंदर है कि ध्यान के शिविर हों और शिविरार्थी परिपक्व हो जाएं तो भक्ति के भी शिविर हों, नृत्य और संगीत के शिविर हों। इसलिए नवंबर माह में ओशो ओम बोधिसत्वा कम्यून, देहरादून में एक शिविर ध्यान के साथ-साथ मुख्यतः संगीत को समर्पित होगा, जिसमें पंडित राजन-साजन मिश्रा जैसे ओशो को समर्पित कलाकारों की उपस्थिति होगी। श्री हंसराज हंस ने भी इस शिविर में सम्मिलित होने के लिए तिथियां नोट कर ली थीं। खूब रसधार बहेगी।

प्रेम, प्रार्थना, ध्यान जीवन के ऐसे आयाम हैं जो अनंत व असीम से जुड़े हैं। शरीर, समय, स्थान आदि की सीमाओं में इनकी शुरुआत होती दिखती है, लेकिन ये फैल जाते हैं असीम में। सीमा में एक ठहराव है, रुकावट है; ऊर्जा के प्रवाह का रुक जाना है। असीम में एक खुलापन है, गति है; ऊर्जा का निरंतर प्रवाह है। असीम में आत्मा अपने स्वभाव में अभिव्यक्त होती है, अपने पंख खोल कर परमात्मा के मुक्त आकाश में उड़ान भरती है। ऐसी परम ऊर्जा से संयुक्त होकर आप कभी थकते नहीं; ऐसी ऊर्जा थकान जानती ही नहीं।

मलेशिया के ओशो वर्ल्ड मेडिटेटर केंद्र में गत शिविर के समापन पर ज्ञात हुआ कि वहां **7** मित्र अब लगातार **21** दिन तक सक्रिय ध्यान जारी रखेंगे, **21** दिन पूरे हुए तो खबर मिली कि अब उन्हें **108** दिन जारी रखने का भाव हुआ है। ध्यान में उन्हें ऐसा रस जगा है कि वह और-और बढ़ रहा है; यह आयाम है अपनी ऊर्जा के अनंत स्रोत से जुड़ने का।

कभी-कभी कुछ मित्र आश्चर्य से पूछते हैं कि कैसे कोई व्यक्ति एक के बाद एक ध्यान-शिविर के संचालन में लगातार संलग्न रहता है, क्या थकान नहीं होती? हां, थकान होती है, लेकिन वह ध्यान-शिविरों की थकान नहीं; अगर है तो वह केवल अलग-अलग स्थानों पर यात्रा की थकान है। ध्यान-शिविर में तो ऊर्जा मिलती है, बढ़ती है, फैलती है—ऊर्जा का एक ऐसा फैलाव आ जाता है कि सभी उसमें नहा लें। वहां तो रसधार है, रस का प्रबल प्रवाह है।

कुछ और मित्र पूछते हैं कि शिविर संचालक क्या कोई विशिष्ट व्यक्ति होता है? उसकी क्या विशिष्टता है?

यह जिज्ञासा स्वाभाविक है। शिविर-संचालक कोई विशिष्ट व्यक्ति नहीं होता—वह एक व्यक्ति है जो शिविर में उपयोग में लाई जाने वाली विधियों का जानकार है, अनुभवी है। विशिष्टता की घोषणा अथवा अनुभव अहंकार है। ओशो ध्यान शिविर ओशो का शिविर है जिसमें सभी विधियां ओशो की हैं, सभी प्रवचन ओशो के हैं; एक व्यवस्था के अनुसार शिविर संचालक शिविरार्थियों के सामने उन्हें प्रस्तुत कर देता है, उन्हें अनुभव से गुज़ारता है। ध्यान के सभी प्रयोगों के संबंध में ओशो के प्रवचनों में सब कुछ उपलब्ध है, शिविर-संचालक के पास यह सब जानकारी है तथा उसने स्वयं इन विधियों का अनुभव किया है। अब वह इन्हें आप तक संवादित करने में कुशल है। यही उसकी भूमिका है। यह एक सामान्य स्थिति है। इस भूमिका में कहीं कोई विशिष्टता नहीं है। निश्चित ही कुछ विशिष्ट व्यक्ति ध्यान-शिविरों में आते हैं, दुनिया में अधिकांश लोग अपने को विशिष्ट ही समझते हैं; लेकिन चूंकि शिविर-संचालक एक सहज व्यक्ति होता है तो आए हुए विशिष्ट व्यक्ति भी शिविर में भाग लेने की प्रक्रिया में जल्दी ही सहज हो जाते हैं। सक्रिय ध्यान, कुंडलिनी ध्यान, नृत्य, हास्य, जिबरिश ध्यान की ये विधियां सभी को बहुत जल्दी सहजता में ले जाती हैं। ध्यान-शिविरों की यही कीमिया है कि विशिष्टता के आवरण उतर जाएं और व्यक्ति सहज-स्वाभाविक हो जाएं।

अहंकार से मुक्त होकर व्यक्ति सहज स्वाभाविक, नैसर्गिक हो जाए तो उसके हृदय में प्रेम का संचार होता है, भक्ति की रसधार बहती है, जीवन रसमय और रासमय हो जाता है। रसो वै सः!

— स्वामी चैतन्य कीर्ति